अनुक्रमणिका

स्वायत्तता का इतिहास—सुधीश पचौरी	9
कैसी स्वायत्तता किसकी स्वायत्तता—रघुवीर सहाय	15
स्वायत्तता के उपयोग का सवाल—विश्वजीत पी० सिंह	19
स्वायत्तता हो मगर कैसी ?—विष्णुनागर	26
मीडिया की लंगड़ी स्वायत्तता—गिरिराज किशोर	31
हरताले की चाबी नहीं है स्वायत्तता—आशीष सिन्हा	35
उल्टे को सीधा करो—असगर वजाहत	39
स्वायत्तता किसलिए—जसवंतसिंह यादव	42
संचार माध्यमों की स्वायत्तता—श्यामाचरण दुबे	46
माध्यमों की स्वायत्तता और विकास के अन्तर्विरोध—सुधीश पचौरी	51
स्वायत्तता : यथार्थवाद का पर्याय ?—गौरीशंकर कपूर	60
स्वायत्तता का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ—सुभाष धूलिया	64
प्रसारण तरंगों की मुक्ति का प्रश्न—मोहन गुरु स्वामी	71
स्वायत्तता का अधूरापन—उपेन्द्र बक्षी	76
इस छलनी में कई छेद हैं—अरविंद जैन	80
प्रसार भारती को नाखून तो दीजिए—जस्टिस ए० एन० ग्रोवर	85
माध्यम : स्वतन्त्रता की समस्याएं—मुल्कराज आनन्द	90
स्वायत्तता की संरचना का अर्थ—के० एस० दुग्गल	92
प्रसारकों पर भरोसा करना होगा—राधानाथ चतुर्वेदी	97
स्वायत्तता : दोषों का इलाज क्या है ?—करन थापर	101
आकाशवाणी में आकाश कितना मुक्त, वाणी कितनी बद्ध —प्रभाकर माचवे	105
इलैक्ट्रानिक माध्यमों के पुनर्गठन की जरूरत—किरण कार्णिक	110
असल मुद्दा तो कार्यक्रमों का है—चंचल सरकार	117
जनता से दूर दूरदर्शन—परिमल कुमार दास	123

क्षेत्रीय चैनलों की स्वायत्तता—जगदीश्वर चतुर्वेदी 126
परिशिष्ट-1. प्रसार भारती विधेयक—1989 का मसौदा 133
परिशिष्ट-2. आकाश भारती विधेयक 1978 का मसौदा 156
परिशिष्ट-3. स्वायत्तता के सात चेहरे 173
परिशिष्ट-4. कार्य की स्वायत्तता 176
परिशिष्ट-5. एक प्राधिकरण चाहिए 178
परिशिष्ट-6. स्वायत्तता जरूरी नहीं 179

लेखक परिचय 181